सांख्ययोगाचार्य-श्रीमद्‌हरिहरानन्द आरण्य-कृत

सांख्यीय प्रश्नोत्तरमाला

(बङ्गलासे हिन्दिमे अनूदित)

कापिल मठसे श्रीसुनील कुमार मुखोपाध्याय

बी, एस्-सी, के द्वारा स्वव्ययसे वितरणार्थ

प्रकाशित।

कापिल मठ, मधुपुर, E.I.Ry.

संवत् १९८८—1932

दो पैसेके टिकटके साथ "मैनेजार कापिल मठको" आवेदन करनेसे यह पुस्तक भेजा जावेगा।

धर्म्मो ज्ञानं विवेकाख्यमिह हि सहजं यस्य पूर्व्वार्ज्जितत्वात्
वैराग्यञ्चैहिकानु ग्रविकविषयकं यद्वशीकार संज्ञम् ।
कृत्वा ध्यानेन साक्षात् प्रकृति पुरुषयो र्यो विवेकं सुसूक्ष्मम्
आदौ चक्रे च शिष्टिं स जयतु कपिलो ह्यादि विद्वान् महर्षिः ॥

सांख्यीय प्रश्नोत्तरमाला

प्रथम खण्ड ।

१ । सांख्य किसे कहते है ?

उत्तर—जो विद्या सकल तत्त्वोंको अच्छी प्रकारसे व्याख्या एवं उसको संख्या करके अच्छी प्रकारसे समझा दे उसीका नाम सांख्य है। यह शान्त वा निर्गुण ब्रह्मके प्रापक होनेसे इसका दुसरा नाम शान्त ब्रह्मविद्या है।

सकल तत्त्वोंको उपलब्धिके प्रणाली का नाम योग है; और यहभी सांख्यके अन्तर्गत है।

२ । सांख्यविद्या किसके द्वारा प्रवर्त्तित हुआ है ?

उत्तर—परमर्षि कपिलके द्वारा। कपिल ऋषिने पूर्व्व-संस्कारबलसे इस जीवनमे धर्म्म, ज्ञान, वैराग्य और ऐश्वर्य्य के प्रस्फुट भाव लेकर प्रादुर्भूत हुवेथे, इससे वे अन्य शिक्षकों की सहायताके सिवाय स्वयं समाधि सिद्ध कर तत्त्वसाक्षात्कार करके उसका सयुक्तिक उपदेश कर गये है। इसलिये कपिलमुनि आदिविद्वान् कहेजाते है।

३ । सांख्य विद्याका विशेषत्व क्या है ?

उ: । सांख्य विद्याका मूल और प्रधान विषयों के निश्चयके लिये अन्ध विश्वासकी आवश्यकता नही है। इसका सकल तत्त्व अनुभवयोग्य वर्त्तमान भाव पदार्थ है

अर्थात् जो मौजुद है ऐसा पदार्थ, काल्पनिक शब्दमात्र नही है और आदिविद्वान् सिद्धश्रेष्ठ कपिलमुनिने इसको समाधि बलसे साक्षात्कार कर इसको उपदेश किया इससे इसका प्रामाण्य सम्यक् संस्थापित है।

४। सांख्य विद्या क्या शिक्षा देती है?

उ:। त्रिविध दु:खोंको जो सदाकालके लिये निवृत्ति वा कैवल्य मोक्ष है, उसीको सांख्यकार्य्यकरी युक्तिके द्वारा अच्छीतरहसे समझाया है। इसरूपसे दु:खके शाश्वतिक निवृत्तिही परमपुरुषार्थ है।

५। पुरुषार्थ कै है।

उ:। भोग और अपवर्ग यही दो पुरुषार्थ हैं। पुरुष वा देही जो चाहता है उसीका नामही पुरुषार्थ है। यह चाहना दो तरहका देखा जाता है। इसलोकमे और परलोकमे अभीष्ट शब्दादि भोग्य विषयके उपलब्धि जनित जो सुख एवं अनिष्ट विषयके प्राप्तिजनित जो दु:ख है वही भोग है। उसके मध्यमे सुखही अर्थनीय भोग एवं दु:ख अवश्यम्भावी आनुषङ्गिक भोग है। त्रिविध दु:खोंसे सम्यक् मुक्तिही अपवर्ग है। भोग प्राय: सब देही चाहते, अपवर्ग कोइ कोइही चाहता है।

६। त्रिविध दु:ख क्या क्या है?

उ:। आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक यह तीन हैं। शरीर मन आदि जिससे हमलोगोंको आत्म-

वुद्धि है उससेही उद्भूत जो दुःख है वही आध्यात्मिक है. भूत वा प्राणी (जिसतरह मनुष्य-सर्पादि) से जो दुःख होता है वह आधिभौतिक है और भूमिकम्प अनावृष्टि आदि अदृष्ट कारणसे जो दुःख होता है वह आधिदैविक दुःख है।

७। दुःखसे किस तरह मुक्ति होती है?

उः। दुःखका जो मूल कारण (अविद्या है) उसको जानकर एवं उसका नाशका उपाय (विवेकख्याति) जानकर उस उपायके द्वारा दुःख नाश करनेसेही मुक्ति होती है। इसका नाम कैवल्य वा निर्व्वाण मोक्ष है।

८। दुःखका मूल कारण क्या है?

उः। अविद्या वा अज्ञान है।

६। अविद्या किसे कहते हैं और उसको भेद कै है?

उः। अयथार्थ ज्ञानका नामही अविद्या है अर्थात् एक विषयको अन्य विषय समझनाही अविद्या है। मोक्ष साधनके लिये उसको चार प्रकार भेद किया जाता है—यथा अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश।

१०। अविद्या किस तरह से दुःखका कारण है?

उः। राग वा आसक्ति, विद्वेष और अभिनिवेश वा भय जो अशेष दुःखोंका कारण है वह सहजहीमें बुझा जाता है। द्रष्टा और दृश्य पृथक् होने परभी उसका एकत्व ज्ञानका नाम अस्मिता है, अस्मिता नामक यह अज्ञान वा अयथार्थ ज्ञान दुःखका मूल कारण है, जिससे इसके द्वारा विज्ञाताके सहित

संयोग होकर विज्ञेय दुःख विदित वा ज्ञान होता है। यह अस्मितासे नाना प्रकार अभिमान पैदा होकर (जिस तरह— जों "मैं" नही है [शरीरादि] उसमे अहन्ता एवं मुझसे जो पृथक् [स्त्रीपुत्र, धन रत्न] है उसमे ममत्व वा "मेरा" इस तरह का बोध होकर) राग द्वेष आदि उद्भूत और पुष्ट होता है। अतएव अस्मिता-राग-द्वेषादि जो दुःखका कारण है उसको नही जानना वा जानकर भी उसके अनुसार कार्य्य नही करनेसे हमलोगोंको अशेष दुःख होता है।

११। द्रष्टा और दृश्य क्या है?

उः। द्रष्टा=जो जाननेका मूल है। दृश्य=जिस वस्तुको जानाजाय। जिसके सहित संयुक्त वा एकत्वज्ञान होनेसे अचेतन दृश्य विज्ञात होता, वही द्रष्टा है।

१२। द्रष्टाका स्वरूप क्या है?

उः। द्रष्टा निर्व्विकार और चित्स्वरूप है। चित्का दुसरानाम चैतन्य है, चितिशक्ति, पुरुष, आत्मा, दृक्शक्ति, ज्ञ, स्वप्रकाश इत्यादि है।

१३। चित् चैतन्य आदिका अर्थ क्या है?

उः। जो जानना खुदबखुद जानना है, जो जाननेके लिये अन्य किसीका अपेक्षा नही है, वैसा स्वबोधका नामही चित् वा ज्ञ इत्यादि है।

१४। चित् निर्व्विकार किसप्रकार हैं?

उः। जो द्रव्यका कोई विकार वा अवस्थान्तरता

नहो होता वही निर्व्विकार है। द्रष्टा सदाही द्रष्टा है, एवं कभोभो उसको अद्रष्टा वा अज्ञाता कल्पना नहो कियाजाता इसलिये द्रष्टा वा चित् निर्व्विकार है।

१५। द्रष्टाका दुसरा स्वभाव क्या है ?

उ:। द्रष्टा देश और कालका अतीत है, कारण देश और काल दृश्य पदार्थ है। द्रष्टा उसकाभो द्रष्टा होनेसे वह देशाश्रयो और कालाश्रयी नहो है। वह अनन्त और सदाही स्वरूपस्थ है। द्रष्टा चित्तके उपरिस्थ है, वे स्थिर चित्तके भो जिस प्रकार द्रष्टा है अस्थिर चित्तकेभो उसी प्रकार द्रष्टा है। चित्तही वदलजाता है, द्रष्टा एकही तरह रहता है।

१६। देशाश्रयी और कालाश्रयी पदार्थ किसको कहते हैं ?

उ:। जो लम्बा, चौड़ा, मोटा वा अवकाशव्यापो है वह देशाश्रयी है। समस्त वाह्य पदार्थ देशाश्रयी है। जो कालव्यापी है वह कालाश्रयी है ; जैसे क्रिया, अथवा मनो-भाव है। देशकालाश्रयी पदार्थ अवयवी वा वहुतका समष्टिभूत है, इसलिये खण्ड करनेके योग्य व विकारी है। अतएव द्रष्टा वड़ा छोटा सर्व्वव्यापी वा अल्पव्यापी इसतरह अवयवी नहो है, एवं स्वस्थ द्रष्टा निर्व्विकारत्व हेतु कालव्यापी नहो है, कारण विकार वा एक ज्ञानके वाद और एक ज्ञान होनेसेही कालज्ञान होता है।

१७। क्यों ; हमलोगतो कहते कि द्रष्टा हमारे भीतर है (देशव्यापी) ; द्रष्टा नित्यकालही है (कालव्यापी) अतएव वह देश-कालाश्रयी क्यों नही हैं ?

उ: । हमलोग दृश्य पदार्थके तुलनासे द्रष्टाको समझते है इसलिये ऐसा कहते हैं। वह वास्तविक द्रष्टा नही है। ये सब ज्ञान (देशकालादिका ज्ञान) निवृत्ति होनेसे वा चित्त-वृत्तिका निरोध होनेसे जो रहता है वही स्वरूप वा प्रकृत द्रष्टा है। अतएव देशकालादि सर्व्वविध ज्ञानके अतीत स्वबोधरूप भावही द्रष्टा है।

आत्मवुद्धिकी ज्ञाता वा प्रतिसम्वेत्ता-रूपमे हमलोग द्रष्टाको जानते हैं। बुद्धि हमारे शरीरका आश्रय कर रहता है इससे समझते द्रष्टाभी हमारे भीतर हैं। वास्तवमे जो देश कालके अतीत है वह कोईभी स्थानमे रहनेके योग्य है इस प्रकार कल्पना करना उचित नही है।

१८। द्रष्टा अनन्त कैसे है ?

उ: । द्रष्टा स्वबोधस्वरूप है इसलिये द्रष्टत्वमे द्वितीय बोध नही होता है। द्वितीयको बोध नही होनेसे वह बोध असीम बोध है।

१९। द्रष्टाके कितनी संख्या है।

उ: । असंख्य प्राणी एवं प्रत्येकका पृथक् द्रष्टा देखा जाता है इसलिये द्रष्टा असंख्य है, किन्तु प्रत्येक् द्रष्टाही सम्पूर्ण तुल्य है।

२० । यदि कहैंकि एकही द्रष्टा वहुत देहीमे है अ. प्रत्येकका द्रष्टा पृथक् नही है ?

उः । सिर्फ कहनेसे नही होगा । अनुभूत विषय तुम्हारा कहने मात्रसेही क्या अपलापित होगा ? 'क्यों, कहोतो' उसका कोई युक्ति प्रमाण है ?

२१ । युक्ति प्रमाण नही है सही, लेकिन शास्त्र कहता है "एकमेवाद्वितीयं" मायावादीलोग उसका अर्थ करते है कि एकही आत्मा है । यह मत क्यों सत्य नही है ?

उः । सिर्फ मायावादीही कहते कि आत्मा एक है, किन्तु अन्य सब दार्शनिक कहते कि—वहुत है । इसलिये तुम्हारे पक्षमे सिर्फ एक दर्शन है, दुसरोंके पक्षमे वहुत है यथा— सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्व्वमीमांसा, विशिष्टाद्वैत प्रभृति । अतएव इसतरह प्रणालीसे जानेमे तुम्हारा मत आस्थेय नही होगा ।

अनुभूयमान वहुत द्रष्टा जो एकसंख्यक है उसका बिन्दुमात्रभी युक्ति प्रमाण नही है । तुम अपनेको एक द्रष्टा होना समझतेहो, किन्तु कल्पनाभी नही कर सकते कि तुम एकही क्षणमे वहुत वहुतसा ज्ञानका द्रष्टाहो । इस लिये एकही द्रष्टा युगपत वहुत ज्ञानका द्रष्टा है यह मत सर्व्वथा अकल्पनीय वाक्यमात्र है । अकल्पनीय प्रमाणहीन वाक्य सर्व्वदा अग्राह्य है । ऐसा कभीभी नही होगाकि कोई एक द्रष्टा समझेगा (द्रष्टा मनन युक्तही नही है) कि मै असुक

अमुक द्रष्टा होगया। कारण अमुक अमुक इत्यादि द्वैतज्ञान त्याग करनेसेही द्रष्टा होता है। इसतरहसे सव द्रष्टा एक संख्यक है यह विलकुल अप्रमेय व अकल्पनीय है। अप्रमेय व अकल्पनीय वाक्य कहनेसे वह ग्राह्य नही होता है। इसलिये "एकमेवाद्वितीयं" वाक्यका अर्थ मायावादी लोग जो कल्पना करते सो ठीक नही है। उसका प्रकृत अर्थ है जगतका स्रष्टा अक्षर ब्रह्म एक है। और 'आत्मा अद्वैत' है अर्थात् द्रष्टा स्वबोध-स्वरूप और अन्य-द्वैतबोधहीन है, कारण आत्मा ज्ञ स्वरूप है। जगतमे मात्र एक संख्यक आत्मा है 'एकमेवा-द्वितीयं' वाक्यका इसतरह काल्पनिक व्याख्या ग्राह्य नही है। अतएव द्रष्टा वा आत्मा वहुत है यही सनातन व समीचीन मत है।

२२। अच्छा द्रष्टा असंख्य होनेसे प्रत्येक ससीम क्यों नही होगा? दश समान द्रव्यके द्वारा यदि एक घर पूर्ण होजाय तो प्रत्येक द्रव्य घरके परिमाणका एक दशवा हिस्सा होगा। द्रष्टा सवभी उसतरह कैसे नही होगा?

उ:। द्रष्टा यदि देशाश्रयी पदार्थ होते तो यह नियम होता। कारण यह नियम देशाश्रयी द्रव्यको देख कर स्थिर किये हो। ज्ञान पदार्थ उसतरह नही होसकता है, उदाहरण यथा, आस पासमे दश आदमी एक द्रव्यको देखते हैं इससे हरएकको वह द्रव्यका एक दशमांशका ज्ञान नही होता है, पूरा ज्ञानही होता है। उसतरह द्रष्टा वहुत होने परभी

देशाश्रयी पदार्थवत् ससीम नही होता है। देशाश्रयी पर्द। जिसतरह करीब करीबमे रहता है, कालाश्रयी पदार्थ उस प्रकार पर पर कालमे है। कालाश्रयी ज्ञान पदार्थ यदि 'उठकर' "लय" होजाय वा विकारी होजाय तबही वह ससीम होता। द्रष्टृत्वमे वह नही होता इसलिये निर्व्विकार द्रष्टा कालसे ससीम नही है।

अतएव द्रष्टा—अद्वैतबोधरूप वा चिद्रूप, निर्व्विकार, अनन्त व बहुत है।

२३। द्रष्टाका लक्षण समझाया। पृथक् द्रष्टा जो है उसका क्या प्रमाण है ?

उः। प्रथम दृश्यका विषय समझकर तब वह समझना होगा। ५० प्रः द्रष्टव्य है।

२४। दृश्य कितने प्रकारके व क्या क्या है ?

उः। दृश्य चौवीस प्रकार है यथा (१) क्षिति (२) अप् (३) तेज (४) वायु (५) आकाश, ये पञ्चभूत है। (६) गन्ध तन्मात्र (७) रस तन्मात्र (८) रूप तन्मात्र (९) स्पर्श तन्मात्र (१०) शब्द तन्मात्र, ये पञ्च तन्मात्र है। (११) वाक् (१२) पाणि (१३) पाद (१४) पायु (१५) उपस्थ, ये पञ्च कर्म्मेन्द्रिय। (१६) कर्ण (१७) त्वक् (१८) चक्षु (१९) जिह्वा (२०) नासा, ये पञ्च ज्ञानेन्द्रिय है। (२१) मन (२२) अहङ्कार (२३) बुद्धि, ये तीन

अन्त:करण है। यह तेइश एवं (२४) प्रधान वा प्रकृति, कुल दृश्य चौवीस प्रकार के है।

द्रष्टा पुरुष एवं प्रकृति आदि चौवीस दृश्य, ये पच्चीसका नाम तत्त्व है।

२५। पञ्चभूतका लक्षण क्या है?

उ:। पञ्च ज्ञानेन्द्रियके द्वारा वाह्य जगत्को जिस प्रकार व्यवहार किया जाता है वही पञ्चभूतका साधारण लक्षण है। पञ्च ज्ञानेन्द्रियोंके गोचर शब्द, स्पर्श, रूप, रस व गन्ध ये पञ्चप्रकार गुणयुक्त वाह्य पदार्थही पञ्चभूत है। अर्थात् शब्दगुणक द्रव्य आकाश, स्पर्शगुणक द्रव्य वायु, रूपगुणक द्रव्य तेज, रसगुणक द्रव्य अप् व गन्धगुणक द्रव्य क्षिति, ये सब साधारण जल व मट्टी नही है सो स्मरण रखना होगा, कारण साधारण जल मट्टीमे पाचों भूतकाही लक्षण वर्तमान है, उनसभीका नाम भौतिक द्रव्य है। वह ज्ञानेन्द्रिय, कर्म्मेन्द्रिय व प्राण ये समस्त शक्तिकाही व्यवहार्य्य है, केवल ज्ञानेन्द्रिय मात्रका व्यवहार्य्य नही है।

२६। तन्मात्र किसको कहते है?

उ:। स्थूल पञ्चभूतका कारण पञ्चतन्मात्र है। शब्दादि गुणोंका जो अति सूक्ष्म अवस्था है उसका नाम तन्मात्र है। स्थूल शब्दस्पर्शादि गुण सकल सूक्ष्म वा अणु शब्दस्पर्शादि गुणोंका समष्टि है। कारण ये कि स्थूल सब सूक्ष्मकाही समष्टिभूत देखा जाता है। वैसा सूक्ष्म शब्द, सूक्ष्म स्पर्श,

सूक्ष्म रूप, सूक्ष्म रस व सूक्ष्म गन्ध यह पञ्चविध सूक्ष्म वाह्य पदार्थका नाम यथाक्रमसे शब्द, स्पर्श, रूप, रस व गन्ध तन्मात्र है। तन्मात्रका माने "वही मात्र" अर्थात् शब्द मात्र, स्पर्श मात्र इत्यादि। वह सब इतना सूक्ष्म है कि स्थूल शब्दादि गुणका जो सा-ऋट, शीत-उष्ण, नील-पीत आदि भेद है वह सब उस अवस्थामे एक प्रकार होता है। नील-पीतादि ये विशेष वा नानात्वरूप भेद लेकर हमलोगोंको सुख दुःख मोह ज्ञान होता है। तन्मात्रमे वैसा विशेष न रहनेसे वह सुख, दुःख व मोहकर नही है। स्थूल शब्दादिमे नानात्व है इसलिये हमलोग अवस्थानुसारसे एकको अच्छा वा सुखकर एवं उसके तुलनासे दुसरेको मन्द वा दुःखकर समझते किन्तु सूक्ष्म तन्मात्रमे सब एकाकार होकर अच्छा बुरा, सुख दुःख भेदका बोध लोप होता, इसकारण तन्मात्रका नाम अविशेष है।

२७। सकल इन्द्रियों किस प्रकारसे होती हैं ?

उः। क्षिति आदि सब भूतोंको हमलोग आत्मशक्तिके वशीभूत कर जो प्रकाश-प्रधान, क्रिया-प्रधान व धारण-प्रधान यन्त्र सब निर्म्माण करते हैं वही सब इन्द्रियां हैं।

२८। सब इन्द्रियां मूलतः कितने प्रकारके हैं ?

उः। दो प्रकारके, वाह्येन्द्रिय व अन्तरेन्द्रिय। प्राणके साथ ज्ञानेन्द्रिय व कर्म्मेन्द्रियही वाह्येन्द्रिय है व मन अन्तरेन्द्रिय है।

२९ । ज्ञानेन्द्रियां किसके द्वारा और किस प्रकार निर्म्मित है ?

उ: । कर्णादि इन्द्रियां सब जो भौतिक द्रव्यके द्वारा निर्म्मित है वह वाह्य होनेसे उसको सबही देख सकते। किन्तु वह भौतिक द्रव्य इसप्रकार यन्त्रित हुवा है देखा जाता है कि उससे शब्दादि गुण गृहीत व प्रकाशित होता है। भौतिक द्रव्यसब जिस शक्तिके द्वारा यन्त्रित होता है वही प्रकृत इन्द्रिय शक्ति है। वह शक्ति कहां रहता है? अस्मिताका आश्रय करकेही वह शक्ति रहता है। कारण 'हमारा कर्ण' वा 'मैं श्रवणशक्तिमान् हुं' ऐसा अनुभव सर्व्वदाही अव्याहतभावसे सभोंकोही होता है। इसलिये ज्ञानेन्द्रियां अस्मिताका एक एक तरहका भाव अर्थात् विशेष विशेष अभिमान स्वरूप है। अतएव अभिमान शक्तिके द्वारा भौतिक द्रव्य यदि इसप्रकारभावसे यन्त्रित हो कि उससे शब्दादि ज्ञान उत्पन्न होसके तो वही ज्ञानेन्द्रिय होजाय। वही ज्ञानेन्द्रिय तत्त्व है। कर्णादि ज्ञानेन्द्रियके द्वारा यथाक्रमसे शब्द, स्पर्श, रूप, रस व गन्ध यह पञ्च ज्ञान होता है।

३० । कर्म्मेन्द्रियका स्वरूप क्या है ?

उ: । ज्ञानेन्द्रियके ऐसा कर्म्मेन्द्रिय सबभी ठीक इसी कारणसे अभिमानमूलक शक्ति है। चालन करना जो सब यन्त्रोंका प्रधान कार्य्य हैं वह सब यन्त्र जो शक्तिके द्वारा यन्त्रित हुवा है वही वागादि कर्म्मेन्द्रिय है। वागादि

कर्म्मेन्द्रियका कार्य्य यथक्रमसे वाक्य, शिल्प, गमन, विसर्ज्ज व प्रजनन है ।

३१ । सकल प्राणोंका तत्त्व क्या है ?

उः । प्राण मबभो इसप्रकारका आत्मशक्ति है । उसके द्वारा फुस्फुस, (फेफड़ा) हृत्पिण्ड, पाकस्थलो आदि यन्त्र निर्म्मित होता एवं ज्ञानेन्द्रिय व कर्म्मेन्द्रियका रस-रक्त-चलाचल आदि कार्य्यभो प्राणके द्वारा होता है, इससे प्राण इन दोनोके मध्यमेही गणित होता है। किन्तु वस्तुतः प्राणका निजस्व यन्त्र है । प्राण पञ्च संख्यक है, यथा— प्राण, उदान, व्यान, अपान व समान । प्राणोंका साधारण कार्य्य धारण करना । धारण अर्थमे शरीरका निर्म्माण, वर्द्धन व पोषण । प्राणका विशेष विवरण "सांख्योय प्राणतत्त्व"मे द्रष्टव्य है ।

३२ । ज्ञानेन्द्रिय व कर्म्मेन्द्रिय कहागया है, अब प्रश्न है कि "मन" क्या है ?

उः । अभ्यन्तरका जो शक्ति वाह्येन्द्रियोंको नियोगादि करता है वही सङ्कल्पक मन है । अन्यमना रहनेसे उपस्थित विषयभो जाना नहो जाता है एवं कुछ कियाभो नही जासकता है इससे मन वाह्यन्द्रियोंका अधीश है ।

मनको दो भागोंमे विभक्त करके समझाया जाता है, यथा चित्त व मन । इसके मध्यमे चित्त ज्ञान व संस्कार धर्म्मक है और मन सङ्कल्पक है । सङ्कल्पन अर्थमे इच्छा,

कल्पना व अवधान वा कृति। कल्पना नही होनेसे इच्छा नही होता। इच्छाके वाद मन वाह्येन्द्रियमे अवधान कर (उतर जानेसे) उसके द्वारा कार्य्य करता है। इसका नाम कृति है। कल्पना करनेसे पूर्व्वज्ञान चाहिये, उसका संस्कार चहिये स्मृति आदिभी चहिये, मनका यह अंशका नाम चित्त है। चित्त व मन अनेक स्थलमे एक अर्थमे व्यवहृत होता है। ज्ञानरूप मन वा चित्तवृत्ति, सङ्कल्पक मन एवं हृदयरूप संस्काराधार मन—मनका यह तीन भाग है।

३३। चित्तकी कितनी वृत्तियां हैं? वृत्तिका अर्थ क्या है?

उः। वृत्ति अर्थमे चित्तका वा विज्ञानका खण्ड खण्ड एक एक अवस्था है। वृत्तियां पञ्च प्रकारके हैं—प्रमाण, विपर्य्यय, विकल्प, निद्रा व स्मृति। इसका विशेष विवरण योगसूत्रमे द्रष्टव्य है। वृत्तिको छोड़कर चित्तका अन्य अंशका नाम संस्कार है।

३४। संस्कार किसको कहते है?

उः। कोई ज्ञान होनेसे उसका एक छाप मनमे वस जाता है, उसका नाम संस्कार है। ज्ञानका संस्कार साक्षात् भावसेही होता है। कर्म्मका संस्कार उस उस कर्म्मका जो ज्ञान वा अनुभव उसका छाप से होता है। अतएव समग्र मन नामक अन्तरेन्द्रियांका तीन प्रकार कार्य्य हुवा (१म)

ज्ञान वा प्रख्या, (२य) सङ्कल्पनादिरूप प्रवृत्ति, (३य)
संस्कार वा स्थिति ।

३५ । मन किस उपादानसे निर्म्मित है ?

उ: । अन्य इन्द्रिय शक्तिके ऐसा मनभी अभिमानके द्वारा निर्म्मित है । "मैं ज्ञानवान् हु" "मैं इच्छावान् हु" इत्यादि अनुभव होता है । इसलिये ज्ञान, इच्छा आदि अस्मिताका एक एक प्रकार भावमात्र है । अस्मिताका आभ्यन्तरिक प्रकाश-प्रधान विकार होनेसे 'ज्ञान' होता है, क्रिया-प्रधान विकार होनेसे 'प्रवृत्ति' होता है, व स्थिति-प्रधान विकार होनेसे 'संस्कार' होता है ।

३६ । वाह्य व अन्तरेन्द्रियोंका इस उपादानका नाम क्या है ?

उ: । उसका नाम अहङ्कार है । अभिमान वा अस्मिता नामसेभी यह कथित होता है । अभिमानको अहङ्कारका गुणभी कहाजाता है ।

३७ । अहङ्कारका लक्षण क्या है ?

उ: । जो अस्मिता नानारूपसे विकृत वा परिणत होता है, वही अहङ्कार है । अहङ्कारका धर्म्म अभिमान है [अस्मिताका नानात्व] ।

३८ । अहङ्कारका क्या कारण है ?

उ: । अहङ्कार अस्मिताका नानात्व है, इसलिये नानात्व-हीन 'केवल मैं' उसका कारण है । प्रथम "केवल मैं" वा

अस्मितामात्र रहनेसे तबही वह 'मैं इस तरह उस तरह' इस प्रकार भाव धारण कर सकोगे। इसलिये 'केवल अस्मिताही' अहङ्कारका कारण है। अभिमानके द्वारा असङ्कुचित यह अस्मिताका नाम महत्तत्व, महान् आत्मा, बुद्धितत्व और अस्मीतिमात्र है।

३८। महत्तत्त्वका उपादान कारण क्या है?

उ:। प्रधानही उसका कारण है, प्रधानका दूसरा नाम 'मूला प्रकृति' और 'त्रैगुण्य' है। 'अव्यक्त' 'अव्याकृत' आदि नाम भी प्रधान का अवस्था विशेषको लक्ष्य कर कहा जाता है।

४०। प्रधानका स्वरूप क्या है, एवं किस प्रकार वह महत्का कारण है?

उ:। प्रधानका स्वरूप प्रकाशशील सत्त्व क्रियाशील रज व स्थितिशील तम, ये तीन गुण है (गुणका अर्थ यहांपर धर्म्म नही है किन्तु तीन बन्धन रज्जुके ऐसा द्रव्य है)।

महत् व उससे जो सब द्रव्य हुवा है उन सभोंका मौलिक स्वभाव प्रकाश, क्रिया और स्थिति वा आवरण है। शब्दादि गुण विश्लेष कर देखनेसे देखोगे उन सभोंका क्रिया वा परिणाम है, परिणत होनेसेही उसका ज्ञान होता या वह प्रकाशित होता है। और शक्तिके बेगैर क्रिया नही होता है, इसलिये क्रियाके मूलमे शक्तिरूप आवरित अवस्थाभी स्वीकार करना होता है। अतएव उसमे प्रकाश, क्रिया व स्थिति

धर्म्म देखा जाता है। वाह्य व अन्तर समस्त द्रव्यमेंही ५
शक्तिरूप अवस्था, क्रियारूप अवस्था व तत्परे प्रकाशरूप अवस्था—ये तीन अवस्था पाया जाता है। इस कारण महदादि समस्त द्रव्यके मौलिक स्वभाव प्रकाश, क्रिया व स्थिति है।

अतएव प्रकाशस्वभाव सत्व, क्रियास्वभाव रज व स्थिति स्वभाव तम—ये तीन सब द्रव्यको कारण है। जैसे घट, कलस, शरा, आदि मिट्टीका चीजमे मिट्टीका स्वभाव देखा जाता है इसलिये यह सव मिट्टी उपादानसे निर्म्मित है ऐसा कहा जाता है, इसीतरह वाह्य व आभ्यन्तर समस्त दृश्य पदार्थमे प्रकाश, क्रिया व स्थिति देखा जाता है इसलिये वह सब ये तीन द्रव्यके द्वारा निर्म्मित है।

४१। प्रधानका स्वभाव क्या है?

उ:। प्रधान सबका कारण है, इस लिये वह दिक् काल आदि समस्त ज्ञानका उपादान होकर वहभी द्रष्टाके ऐसा दिक् कालादिका अतीत द्रव्य है। वह अनन्त विश्वका उपादान होनेसे अनन्त है। वह सब द्रष्टाका साधारण दृश्य होनेसे एक है; और वह तीन गुणका समष्टि है। अनन्त द्रव्योंका अङ्ग होकर तीन गुण प्रत्येकमे अनन्त है। इस कारण प्रधान=अनन्तसत्व+अनन्तरज+अनन्त तम, अर्थात् समपरिमाणसे तीनोगुण ही प्रधान है।

प्रधानका अङ्गभूत तीनगुण परस्पर अविच्छेदसे मिलित

है। कभीभी उससे वियुक्त नहो होता है। कारण जो शक्तिरूपसे (तम) रहता वही क्रियाशील (रज) होकर ज्ञान (सत्व) हो तो देखा जाता है, अतएव ये प्रकाश क्रिया व स्थितिका विच्छेद कल्पनीय नही है। इससे वह सब परस्पर अङ्गाङ्गि भावसे नित्य अवस्थित है कहना होगा। प्रधान दृश्य होकर अचेतन है, कारण द्रष्टाके मध्यमेही जो चेतनता है सो अनुभूत होता है। द्रष्टाके विरुद्ध दृश्य है, इस कारण वह अचेतन है।

४२। प्रधानका कितने प्रकारको अवस्था है ?

उः। दो प्रकार—व्यक्त व अव्यक्त। जो गोचर होता है वह व्यक्त है, एवं जो वैसा नही होता सो अव्यक्त है। महत्, अहङ्कार आदि तेईश द्रव्य व्यक्त है, और वह सब लीन होनेसे जो शक्तिरूप अवस्थामे जाता है वह अव्यक्त है। अव्यक्त अवस्थामे तीनो गुण समान रहता वा वह गुणसाम्य अवस्था है; एवं व्यक्त अवस्थासे गुणत्रय असमान होता वा वह गुण वैषम्य है।

४३। गुणत्रयका साम्य होनेसे कैसे अव्यक्त अवस्था होता है ?

उः। जितना प्रकाश उतना आवरण वा जितना क्रिया उतना जड़ता रहनेसे परस्पर काटाकाटी होजायगा, इसकारण कोई व्यक्त भाव नही रहैगा। जैसे एक रज्जुके दोनोतरफ समपरिमाण भार देनेसे वा समान बलसे खीचनेसे रज्जु

इधर या उधर किसी तरफ नही जासकता है। व्य-
द्रव्यका स्वभाव परीक्षा करनेसेभी देखाजाता है कि उसमे
गुणत्रयकी विषमता है ; समताही अव्यक्त अवस्था है ।

४४ । गुणवैषम्यरूप व्यक्तावस्था किस तरहसे होता है ?

उ: । द्रष्टाका संयोगसेही विषमता होता है। स्वप्रकाश
चेतन द्रष्टाके सहित योगसे अचेतन प्रधान चैतन्यवत् होजाता
है। इसकारण वह आदि संयुक्त भावमे वा बुद्धिमे प्रकाश
स्वभाव अधिक होता है। यह एक सत्त्वाधिक्यरूप वैषम्य
है। बुद्धिका उद्भव व लयरूप क्रियाही क्रियाधिक्यरूप
वैषम्य है। लीन होकर संस्काररूपसे रहना स्थित्याधिक्यरूप
वैषम्य है। इसतरहसे द्रष्टाके सहित संयोगसे वैषम्य होता है।

४५ । गुणवैषम्य वा व्यक्तावस्था कितने समयसे है ?

उ: । अनादि कालसे है। कारण द्रष्टा व गुणत्रय
अनादिविद्यमान वा नित्य पदार्थ है। इनके संयोग
गुणवैषम्यका कारण है। अनादि कालसे संयोगका कारण
नही रहनेसे, अकस्मात् संयोग नही होसकता है, अतएव
संयोगका कारण (अविवेक), सुतरां संयोग, सुतरां गुणवैषम्य
अनादि है।

४६ । कोई कोई कहते विकारी द्रव्य नित्य नही
होता है, यह क्या सत्य है ?

उ: । नही। जो हमेसा है वही नित्य है। विकार-
शील गुणत्रय हमेसा है इससे वह नित्य है। नित्यता

दो प्रकारका है—परिणामी नित्य व अपरिणामी नित्य। त्रिगुण परिणामी नित्य है व द्रष्टा अपरिणामी नित्य है।

४७। अविवेक किस प्रकारसे द्रष्टा व दृश्यका संयोगका कारण है?

उः। विवेक ज्ञान होनेसे द्रष्टा व दृश्यका वियोग होता है ऐसा देखाजाता है, इससे अविवेक संयोगका कारण है (दुसरे प्रश्नका उत्तर द्रष्टव्य है)। विवेक अर्थमे पृथक् करके जानना है। द्रष्टा व दृश्यको पृथक् कर जानना विवेक है और वह नही जानना अविवेक है।

४८। अविवेक क्या अनादि कालसे अखण्डभावसे है? वैसा होनेसे वह नष्ट होगा किसतरहसे?

उः। अविवेक एक प्रकार ज्ञान है, सुतरां समस्त ज्ञानका वा चित्तवृत्तिके ऐसा वह उठता औ भङ्ग होता है। अभङ्ग एक कोई चित्तवृत्ति नही होता है। उठता औ भङ्ग होता इसलिये वह बिलकुल भङ्गके योग्य है। एक अविवेक ज्ञान एकक्षण उठकर दुसरे क्षण लय होता है, उसका संस्कारसे उसके दुसरे क्षण और एक अविवेक ज्ञान

ता है, इसतरहसे प्रवाह चलता है। कबसे यह प्रवाहका आरम्भ है वह जाना नही जाता है इसलिये (अर्थात् निष्कारणसे हठात् अविवेक होजाना कल्पनीय नही है इसलिये) वह अनादि है। और यदि विवेक ज्ञान हो

और उसके द्वारा चित्तवृत्ति सम्यक् रुद्ध हो तब फिर नहीं होता है।

४८। मूल अविवेक क्या है ?

उ:। 'मैं द्रष्टाहूं' इसतरह बुद्धि वा महान् आत्माही मूल अविवेक है। इसको ग्रहीताभी कहते। 'अस्मितामें' दृश्य द्रव्यका अभिमानभी रहता है एवं द्रष्टाका अभिमानभी रहता है, इससे वह द्रष्टका व दृश्यका एकत्व ज्ञानरूप मूल अविवेक ज्ञान है।

५०। 'द्रष्टा है' सो किस प्रकारसे जाना जाता है ?

उ:। अस्मिताको विश्लेष कर जाना जाता है। अस्मितारूप ज्ञान वा आत्मबुद्धि दो प्रकार विरुद्ध द्रव्यका समष्टि है। उसमें 'मैं अविभाज्य एक हूं' ऐसा ज्ञानभी रहता है, "मैं शरीर मनोयुक्त" इसप्रकार बहुत्वका बुद्धिभी रहता है। 'मैं ज्ञाता हूं' इसप्रकार चेतन बुद्धिभी रहता है, 'मैं शरीरी हूं' इत्यादि बुद्धिभी रहता है। अतएव अस्मिताका दो कारण हैं, एकतो चेतन अविभाज्य एक वा निर्व्विकार है, और दुसरा अचेतन, विभाज्य वा विकारी है। प्रथमतो स्वप्रकाश द्रष्टा है, और द्वितीय दृश्य त्रिगुण है।

५१। कारण क्या है और के प्रकारका है, द्रष्टा अस्मिताका कारण किसतरहसे है ?

उ:। जिससे कोई कार्य्य होता है वही उसका कारण है। कारण दो प्रकारके है—उपादान व निमित्त। उपादान

कारण विकृत वा अवस्थान्तरता प्राप्त होकर कार्य्य उत्पादन करता है। निमित्त कारण विकृत वा अविकृत होकर कार्य्यका हेतु होता है। मिट्टी घटका उपादान कारण है। घट तइयार होनेमे और जो जो कारणका आवश्यक है वही उसका निमित्त कारण वा हेतु है। हेतु सबस्थलमे विकृत होकर कार्य्यद्रव्यमे नही जाता है। जैसे सूर्य्यालोक हमारे अनेक कर्म्मोंका हेतु है, वह कर्म्मके मध्यमे सूर्य्यालोक नही जाता है या वह सूर्य्यालोकका विकार नही है।

विवर्त्तकारण आदि अन्य सब कारण ये दो कारणके अन्तर्गत है। वहभी निमित्त कारणके अन्तर्गत है। रज्जुमे सर्पभ्रम होनेसे रज्जुको वह सर्पके विवर्त्त उपादान कहा जाता है। रज्जुरूप निमित्तसे सर्परूप मनोभाव होता है।

अस्मिताका अविकारी निमित्त कारण द्रष्टा है। द्रष्टाका चेतनासे बुद्धि सचेतनवत् होता है। दृश्यही उससे विकृत होता है, द्रष्टाको कुछ नही होता है, द्रष्टा हमेशा द्रष्टाही रहता है। साम्यावस्थ त्रिगुण द्रष्टाका सान्निध्यसे विषम वा व्यक्त होता है। वह विषमताको नानाप्रकार भेदही नाना व्यक्त भाव है।

५२। द्रष्टा व गुणत्रय अनादि विद्यमान पदार्थ क्यों है?

उ:। दोनोका विश्लेष करनेसे उसका और कारणभूत अन्य द्रव्य पाया नही जाता हैं इसलिये वह नित्य द्रव्य है। जो वस्तु कोई उपादान व हेतुसे उत्पन्न होता, वह पहले या

पीछे उस उपादानरूपमे था अथवा यथायोग्य हेतुसे वहे उपादानके रूपमे जासकता है। जिसका अन्य उपादान व हेतु नही है वह बराबर स्वरूपमे है व रहैगा। द्रष्टा अविभाज्य एक है, इसकारण एकही रहैगा एवं वह स्वबोध (वा तद्गत बोध अन्य किसी हेतुसे उत्पन्न नही होता है) इसकारण वह स्वबोधही रहैगा।

तीनगुणभी दृश्य द्रव्यका मौलिक स्वभाव है। प्रकाशशीलता, क्रियाशीलता व स्थितिशीलता कोई हेतु द्वारा उत्पन्न होनेवाला नही है, कारण वह सब समस्त दृश्य हेतुका मूल है। इसकारण वह सब बराबर है व रहैगा। समझो कि क्रिया, वह किसतरह होता है? पूर्व्वमे एक न एकरूप क्रिया रहनेमे वही क्रिया होसकता है, इसकारण क्रिया नित्य है। प्रकाश एवं स्थितिभी उसीतरह है।

व्यक्त द्रव्य सब द्रष्टा व दृश्यके संयोगरूप मूल हेतुसे उत्पन्न होता है। वह प्रवाहरूपसे अनादिकालसे रहतेभी वह संयोगरूप हेतुका अभाव होनेसे व्यक्तता त्याग कर अव्यक्तता प्राप्त होसकता है।

५२। द्रष्टा व दृश्य त्रिगुणसे किसप्रकार महान् आत्मा होता है?

उ:। द्रष्टा स्वप्रकाश है। क्रियाशील रज यदि प्रकाशशील सत्त्वको स्वप्रकाशाभिमुख प्रवर्त्तित करे तब क्या होगा? स्वप्रकाशवत् एक प्रकाश वा ज्ञान होगा। विशुद्ध

अस्मिता वा महान् आत्माही वैसा स्वप्रकाशवत् एक ज्ञान है। कारण "मैं अपनेको जानता हूं" इस प्रकार अनुभूति सदाही होता है। इसप्रकार द्रष्टा व दृश्यका संयोगसे महत् होता है।

५४। महत्से किसप्रकार अहङ्कार होता है?

उ:। महान् आत्मा विशुद्ध अस्मितारूपा बुद्धि है। वह "मैं इसप्रकार उसप्रकार' इत्याकारसे परिणत होनेके योग्य है। वह योग्यतासे जब अस्मिता सकुंचित-अभिमान युक्त होता है तबही उसको अहङ्कार कहाजाता है।

५५। अहङ्कारसे किसप्रकार इन्द्रिय व सूक्ष्म भूत सब होता है?

उ:। पहले कहा जाचुका है कि कर्णादि इन्द्रिय आत्मशक्तिके द्वारा यन्त्रित (अर्थात् यन्त्ररूपसे सज्जित) यन्त्र है। अभिमान जब कर्णरूप यन्त्रके अनुरूप होता है, तब शब्दग्राहक कर्ण इन्द्रिय होता है। त्वक्, चक्षु आदिके सम्बन्धमेभी यही नियम है। मनभी इसप्रकार अभिमानके आभ्यन्तरिक यन्त्रित अवस्था है। कर्म्मेन्द्रिय एवं प्राणभी इसप्रकार है।

शब्दादि भूत गुण सकल मनका भाव हैं। बाहरके क्रिया विशेषके द्वारा श्रवणेन्द्रिय उद्रिक्त होनेमे जो बोध होता है हमलोग उसको 'शब्द' कहते। उसतरह वाह्यका अन्य एक प्रकार क्रियाके द्वारा चक्षु उद्रिक्त होनेसे हमलोग उसको 'रूप'

कहते। अतएव बाहरमे केवल विशेष विशेष क्रिया है, शब्दादि सब तदुद्भूत मानसिक भाव विशेष है। इसकारण वहभी अभिमानका अवस्था विशेष है।

भूत सबका जो वाह्य सत्ता है, जिसके क्रियाके द्वारा इन्द्रियगण सक्रिय होजानेसे रूपादि ज्ञान होता है, वह ब्रह्माका इच्छारूप भूतादि अभिमान है (सांख्यतत्त्वालोक ६२ प्रकरण द्रष्टव्य है)। अतएव सूक्ष्मभूत व इन्द्रियोंका उपादान अभिमान है।

५६। सूक्ष्मभूत वा तन्मात्रसे किसप्रकार स्थूल भूत होता है ?

उ:। सूक्ष्म भूत वा शब्दमात्र, स्पर्शमात्र इत्यादि सूक्ष्म शब्दादि गुण यदि स्थूलभावसे गृहीत हो तबही स्थूल भूत होता है; जैसे एक एक सूक्ष्म रेणु हम् देख नही सकते किन्तु उसके समष्टि देख सकते हैं, उसी तरहसे। इसी प्रकारसे तन्मात्रसे स्थूल भूत होता है।

ये सब कथा स्मरण करनेके लिये निम्नस्थ सांख्यसूत्र स्मरण रखना होगा—"सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः, प्रकृते र्महान् महतोऽहङ्कारः, अहङ्कारात् पञ्चतन्मात्राण्युभयम् इन्द्रियं, तन्मात्रेभ्यः पञ्चभूतानि, पुरुष इति पञ्चविंशतिर्गणः" ।

☞ पृ ७, पं १८ "युगपत" शब्द "एकसाथही" होवेगा।

कापिल मठका नवीन पुस्तकें (बङ्गला)।

१। "काल व दिक् वा अवकाश"—काल व दिक्के सम्बन्धमे मौलिक गवेषणा। दर्शन व विज्ञानका अपूर्व्व समाधान कर समस्त जटिलता निराकृत कर काल व दिक् ज्ञानको उद्भव कंहासे वह सांख्यीय दृष्टिसे दिखाया गया है। तीन आनाका टिकट भेजनेसे प्रेषित होता।

कलकत्ता युनिवार्सिटी ला कालेजके प्रिन्सिपल डा: सतीशचन्द्र वागची, LL.D., Bar-at-law, कहते— "पुस्तिका आकारमे छोटी है, किन्तु इतना छोटा पुस्तकमे ऐसा कठिन व्यापारका ऐसा सरल व्याख्या की गई है जो इसके पहले बङ्गला भाषामे कोईभी नही करसके। * * * इस विषयका पुस्तक प्राय पञ्चास वर्ष पूर्व्व अंग्रेजीमे एक प्रकाशित हुवाथा। विख्यात वैज्ञानिक Maxwell अवैज्ञानिकोंको matter and motion क्या है वह समझानेकेलिये एक छोटा पुस्तक लिखा। एक मशहूर शिक्षकने उस पुस्तकको समालोचना कर कहते—यह अपने वजनके सोनाके समान मूल्यवान् है। वर्त्तमान पुस्तकके सम्बन्धमे ठीक वही वात कही जासकती है। आजकल पश्चिमदेशमे जो सब वैज्ञानिक तथ्य दार्शनिकोंके विज्ञानके तरफ लेगया है वह सब कथा अति प्राञ्जल भाषामे इस पुस्तकमे सांख्यदर्शनके दिक् से आलोचित हुवा है। इसमे Einstein के Relativity एवं Planck, Heisenberg

व Schrodinger के Quantum theory व Wave mechanics की दार्शनिक व्याख्या संक्षेपसे निबद्ध हुवा है। German भाषामे Freundlich, Study and Einstein; French भाषामे Bergson, E. Borel; Italian भाषामे Prof. Aliotta एवं हमारे अपने भाषामे 'काल व दिक् वा अवकाश' नामक पुस्तिकाके लेखक जनसाधारणके लिये जो परिश्रम स्वीकार किया उससे मननशील लोगमात्रही इनको पास चिरऋणी रहेंगे। यह पुस्तकका खूब प्रचार वाञ्छनीय है"।

२। कर्म्मतत्त्व—(मूल्य रु० १) कर्म्मके द्वारा कैसे जन्म, आयु व सुख दुःख फल होता उसका दार्शनिक व वैज्ञानिक व्याख्या। इसमे प्राचीन व आधुनिक दार्शनिक मत, आधुनिक वैज्ञानिक मत सइकिकेल रिसर्चके आविष्कृत तथ्य प्रभृतिके सहित सांख्योय कर्म्मवादकी तुलना व मीमांसा कीगई है। श्रीमत् सांख्यप्रकाश ब्रह्मचारी व श्रीसुनीलकुमार मुखोपाध्याय बी, एस-सि कृत टीका सहित।

३। 'भास्वती'—योगभाष्यका नवीन संस्कृत टीका। काशी चौखम्बा संस्कृत सिरीजमे सटीक योगकारिकाके साथ प्रकाशित होता है।

पण्डित श्रीयुक्त गोपीनाथ कविराज, एम-ए (काशी गवर्णमेण्ट संस्कृत कालेजके प्रिन्सिपल; सुपरिण्टेण्डेण्ट, संस्कृत ष्टाडीज, युनाइटेड् प्रविन्स) कहते है—"अबतक

योगदर्शन सम्बन्धमे जोकोई भाषामे जितना ग्रन्थ प्रकाशित हुवा है उसके मध्य यह सर्व्वोत्कृष्ट है"।

कापिलाश्रमीय पातञ्जल योगदर्शनादिके बारेमे पण्डितमण्डलीका अभिमत :—

श्रीयुक्त गोपीनाथ कविराज, एम-ए (प्रिन्सिपल, गवर्णमेण्ट संस्कृत कालेज, काशी) कहते—

* * * बङ्गला व अंग्रेजी भाषामे योगभाष्य व सांख्यदर्शन सम्बन्धमे अबतक जितना ग्रन्थ व आलोचनाग्रन्थ प्रकाशित हुवा है उसका कोईभी व्याख्यावैशारद्य, प्रतिपाद्य विषयका स्पष्टीकरण एवं ग्रन्थका पूर्व्वापर सङ्गति रक्षापूर्व्वक शास्त्रका निगूढ़ रहस्यका उद्भेदन सम्बन्धमे स्वामीजीकी व्याख्याके सहित उपमित होनेके योग्य नहीं है। * * * * विचार व स्वानुभूतिके सहित शास्त्रका समन्वयका ऐसा दृष्टान्त आजकल बिलकुलही दुर्लभ है। ऐसा ग्रन्थ जितनाही प्रचारित हो उतनाही देशका मङ्गल है।

काशी हिन्दु युनिवार्सिटीके संस्कृत कालेजके सांख्य व योगके अध्यापक महामहोपाध्याय पण्डित श्रीयुक्त अन्नदाचरण तर्कचूड़ामणि कहते—

"* * ग्रन्थकारने प्राच्य व पाश्चात्य दर्शनशास्त्रमे सुपण्डित एवं मोक्षसाधनमे उत्सर्गीकृत जीवन, तीव्र वैराग्यवान्, असाधारण प्रतिभाशाली एवं सुदीर्घकालव्यापी साधनवान्, एकनिष्ठ तत्त्वदर्शी योगी होकरही वह ऐसा

साधनसम्बन्धीय, अज्ञातपूर्व्व तत्त्वयुक्तिपूर्ण, विशुद्ध, गम्भीर व अनवद्य दार्शनिक ग्रन्थ लिखनेमे समर्थ हुवे है। ग्रन्थ शिक्षार्थियोंके सहजबोध्य करनेके लिये चेष्टाकी त्रुटि नही हुवी। सांख्ययोग सम्बन्धमे ऐसा ग्रन्थ और देखा है ऐसा ख्याल नही होता।

स्वाधीन त्रिपुराके राजपण्डित महामहोपाध्याय श्रीवैकुण्ठ नाथ वेदान्तवाचस्पति—"* * * योगदर्शन (वा कोईभी दर्शन) ऐसा आकारमे इसप्रकारसे कोईभी अबतक प्रकाश नही किया, योगतत्त्व समझानेके लिये इस ग्रन्थमे जो प्रणाली अवलम्बित हुवा है वह वर्त्तमान कालके सम्पूर्ण उपयोगी व अनुकूल है। अधिक क्या कहैं दुसरा निरपेक्ष होकरभी यह ग्रन्थ आयत्त किया जासकता है, ऐसा सुन्दरभावसे व्याख्या विशेषणादि किया हुवा है। यह ग्रन्थका आदर नही करैंगे ऐसा पण्डित ज्ञानी, योगी, भक्त वा तत्त्वानुसन्धित्सु नही है। अगर होंतो वह हतभाग्य है, उनका मङ्गल बहुत जन्ममे साध्य है"।

लाहोरके Tribune, Punjabee व Hope पत्रिकाके भूतपूर्व्व सम्पादक श्रीयुक्त अमृतलाल राय—" * * वास्तवमे इसको इसप्रकारसे अंग्रेजी भाषामे ग्रथित करना चहिये जिससे यथार्थही एक अक्षयकीर्त्तिके स्तम्भस्वरूप (हमारा या और किसीका भी नही है आर्ष शास्त्रका) होकर खड़ा रहे। "नास्ति सांख्यसमं ज्ञानं नास्ति योगसमं वलं" यह पुस्तक पढ़कर जैसा उपलब्धि होता वह और किसीके द्वारा नही

ा। सांख्य व योगशास्त्र कैसा अमूल्य पदार्थ व मनुष्यके ज्ञानको चरम सोमामे उपस्थित है सो Europeको समझानेका यह प्रधानतम उपाय है।"

महामहोपाध्याय पण्डित कामाख्यानाथ तर्कवागीश—"इसकालमे जो सब अनुवाद प्रकाशित हुवा है उसके मध्यमे अनेक अनुवादही शब्दानुवाद है, शब्दानुवाद द्वारा मूलका तात्पर्य्यावगतिको सम्भावना नहो है। परन्तु आपका प्रकाशित अनुवाद वैसा नहो है; यह प्रकृतहो अर्थानुवाद है; कहना वाहुल्य है, आपका यह पुस्तक प्रकाशित होनेसे देशका विशेष उपकार साधित हुवा है"।

यह पुस्तकका सांख्यतत्त्वालोक पढ़कर पण्डित श्रीयुक्त कालीवर वेदान्तवागीशने लिखा है—"जो देखा है उससे समझा, यह ग्रन्थ अति उपादेय हुवा है। नव्य सम्प्रदायका विशेष उपकारी वा है ऐसा बोध हुवा है। हम जो सांख्यका वङ्गानुवाद प्रकाश किये है उसके मुकाविला यह वहुत उत्कृष्ट है।"

Rai Rajendra Chandra Shastri Bahadur, M.A. Translator to the Government of Bengal, Calcutta—"I consider it a work of rare merit."

Emerald Printing Works.
9, Nandakumar Chaudhuri's 2nd Lane,
CALCUTTA.